# ' राम कथा–काव्य परम्परा में ''परित्यक्ता'' '

## विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा
की पी–एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

## शोध–प्रारुप

संकाय–मानविकी
विषय–हिन्दी


शोध निर्देशक

डॉ0 सुरेन्द्र प्रसाद सुमन
एसोसिएट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
ल0 ना0 मि0 विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा
पिन–846009

अनुसंधायिका

कल्पना कुमारी
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
ल0 ना0 मि0 विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा
पैट क्रमांक–22090164

# ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय,दरभंगा के अंतर्गत मानविकी संकाय के हिन्दी विषय में पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित " शोध - प्रारूप"

*

*   *

## शोध-शीर्षक-

## "राम कथा -काव्य परम्परा में 'परित्यक्ता' "

**

प्रस्तावना - भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में तथाकथित मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में विख्यात मिथकीय पात्र राम का विशेष महत्त्व रहा है। राम का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है,जो अन्य प्रतापी यजमानों के साथ प्रयुक्त होने के कारण प्रतीत होता है कि वह कोई राजा था । सीता का उल्लेख ऋग्वेद में कृषि की एक अधिष्ठात्री देवी के रूप में हुआ है। इसके अलावे ऐतरेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण, छान्दोग्य उपनिषद, तैतिरीय ब्राह्मण आदि साहित्य में भी राम, सीता, जनक, कैकेयराज्य, मिथिला राज्य आदि का उल्लेख मिलता है। इन सभी का प्रत्यक्ष सम्बन्ध वाल्मीकि रामायण या आदि रामायण से स्थापित नहीं हो पाया है, फिर भी यह स्पष्ट है कि वाल्मीकि कृत रामायण से पूर्व भी जनश्रुतियों व मिथकों में राम और सीता के चरित्र का आभास मिलता है। जिस प्रकार भाषा का प्रवाह संस्कृत, पालि, प्राकृत से होते हुए अपभ्रंश, अवहट्ठ के बाद विकसित रूप में हिन्दी तक पहुंचता है, उसी प्रकार रामकथा का प्रवाह भी विभिन्न बोलियों एवं देशी-विदेशी भाषाओं से गुजरते हुए हिन्दी भाषा तथा साहित्य परम्परा का अभिन्न हिस्सा बन जाता है। कथा- काव्य परम्परा के प्रवाह के साथ ही राम का चरित्र भी युगीन संदर्भो के अनुकूल मिथकों के सहारे आगे बढ़ता है। इससे न सिर्फ राम का, वरन सीता, लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, जनक, उर्मिला, मंथरा, कौशल्या, केकैयी, सुमित्रा आदि के चरित्र में भी परिवर्तन देखने को मिलते हैं। साहित्य महज समाज का दर्पण ही नहीं, मशाल भी है- ऐसी स्थिति में कविकर्म का सोद्देश्य होना स्वाभाविक ही है। सर पर कफ़न बांधकर सत्य की मशाल थामे चलनेवाले कबीर जाति, सम्प्रदाय और वर्ग का समूलोच्छेद करके समाज में समानता स्थापित करने के उद्देश्य से कविकर्म कर रहे थे। इसलिए घट-घट में रमण करनेवाला उनका निगुर्ण राम है-"एक राम है जगत पसारा/एक राम है सबसे न्यारा/एक राम दशरथ घर डोले/एक राम घट-घट में बोले"। तुलसी समाज में सामंजस्य स्थापित करनेवाले यथास्थितिवादी थे । इसीलिए तथाकथित मर्यादापुरुषोत्तम शास्त्रसम्मत आदर्शवादी सगुण राम ही उनका अपना राम है। भक्तिकाल के परवर्तीकाल रीतिकालीन रामकाव्य पर शृंगारिकता का प्रभाव कहीं अधिक गहरा है।भारतेंदुयुग से द्विवेदी युग तक राम के चरित्र का विकास मानवतावादी आवरण में प्रकट होने के कारण मैथलीशरण गुप्त के 'साकेत काव्य' में 'उर्मिला 'जैसी उपेक्षित पात्र ने प्रधानता पाई है। छायावादी युग में राम के चरित्र का उद्घाटन स्व के संघर्ष के साथ ही राष्ट्र के संघर्ष के रूप में महाप्राण कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की सुप्रसिद्ध कविता ' राम की शक्ति पूजा ' में होता है। भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के दौर में भी दोतरफा राजनीतिक संघर्ष चल रहा था- आन्तरिक और-बाह्य । राजनीतिक परिवेश में जहां एक ओर स्वतंत्रता आन्दोलन के उतार-चढ़ाव, आशा-निराशा ,संघर्ष,सफलता- असफलता का पूरा परिदृश्य 'राम की शक्ति पूजा' में रेखांकित है वहीं आन्तरिक स्तर पर भी राम-रावण का संघर्ष रेखांकित हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गरीबी, शोषण-उत्पीड़न और अशिक्षा से मुक्ति के सवाल कई रूपों में और कई स्तरों पर उठ रहे थे। भारत में पूंजीवाद का उदय सामंतवाद के साथ गठजोड़ या सहअस्तित्व के कारण शोषणमूलक चरित्र के रूप में ही हुआ । इसके साथ ही सामंतवाद के ऊपर पूंजीवाद के राजनीतिक नेतृत्वों की निर्भरता के कारण संवैधानिक उद्देश्यों की प्राप्ति के मार्ग में बाधा उत्पन्न होती रही है। शिक्षा का प्रचार-प्रसार आम जनों तक नहीं होने के कारण विकास के दौर में दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों की हिस्सेदारी नहीं हो पाई है। स्त्रियों की स्थिति बहुत ही दयनीय है। कानून बनने के बाद भी उन्हें सामाजिक बंधनों से मुक्ति नहीं मिल रही है।तद्नुसार 'राम- काव्य' कथा के साथ-साथ उसके मिथको में भी परिवर्तन होने लगा। राम- काव्य नित्य नए रूपों में कवियों और लेखकों द्वारा प्रस्तुत किया जाने लगे। रामकथा-काव्य परम्परा

को मार्क्सवादी नजरिए से समझने और लिखने का श्रेय कवि-आलोचक सुरेन्द्र प्रसाद को जाता है। सुरेन्द्र प्रसाद अपने छात्र जीवन से ही शिक्षा और समाज के महत्त्व को समझते थे। इसलिए अध्ययन के साथ ही उन्होंने समाज में व्याप्त गरीबी,अशिक्षा,बेरोजगारी एवं शोषण-उत्पीड़न जैसी विसंगतियों से मुक्ति के लिए अपने गांव के प्रगतिशील नौजवानों को संगठित कर गाँव में ही एक पुस्तकालय की स्थापना करवायी थी। बी० एड० करने के बाद जीविकोपार्जन के लिए सर्वप्रथम उन्होंने वासुदेवपुर चन्दैल हाई स्कूल में कुछ दिनों तक अध्यापन का कार्य किया, फिर समस्तीपुर जिला के हरि शंकरी गाँव में एक हाई स्कूल की स्थापना कर प्रधानाध्यापक का कार्य संभाला। वहाँ रहते हुए उन्हें स्थानीय जमींदारों से भी टकराना पड़ा तथा जमींदारों द्वारा करवाये गये हिन्दू मुस्लिम दंगों के दंश को भी झेलना पड़ा। उसी दौर में उन्होंने अपने गाँव नारायणपुर डेढ़पुरा में एक हाई स्कूल की स्थापना करवाई। वंचित तथा उपेक्षित तबकों को उच्चतर शिक्षा से जोड़ने के लिए सन् 1969 ई० में उन्होंने बी० आर॰ बी॰ कॉलेज की स्थापना कुछ स्थानीय बुद्धिजीवियों एवं समाजसेवियों के साथ मिलकर की। पहले प्रधानाचार्य और फिर प्राध्यापक के तौर पर उस कॉलेज में उन्होंने 21 वर्षों तक सेवा की। इसके अलावे समस्तीपुर में उन्होंने संत कबीर कॉलेज, एस०एम० आर० सी० के० कॉलेज की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए विद्या भगत महिला कॉलेज की स्थापना की। सामाजिक-राजनीतिक संघर्षों में सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण उन्हें वह दृष्टि मिली, जिससे उन्होंने प्रभुवर्ग के दोहरे चरित्र और शोषण के कुचक्र को भली- भांति पहचान लिया । शिक्षा शोषण के कुचक्र को तोड़ने का सबसे मजबूत औजार है, लेकिन यथास्थितिवादी समाज और शासन के विरुद्ध जाकर महिलाओं और वंचित तबकों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करना उतना आसान भी नहीं है। फिर भी कवि की असीम जनपक्षधरता जहां उन्हें एक ओर जनकवि होने का गौरव प्रदान करती है वहीं दूसरी ओर जनसंधर्ष की बहुआयामी गहन अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए उन्हें मिथकों का सहारा लेने के लिए मजबूर करती है। राम कथा- काव्य परम्परा में 'परित्यक्ता' का स्थान इसी धात प्रतिघात और झंझावात का प्रतिफलन के रूप में विश्लेषणीय है।

'परित्यक्ता' में जनकवि सुरेन्द्र प्रसाद ने राजसत्ता द्वारा स्त्री सीता- निष्काषण और दलित शंबूक -वध को आधार बनाकर प्रबंध काव्य की रचना की है। कथा का आधार पौराणिक है किन्तु जिन समस्याओं का चित्रण हुआ है, वह समसामयिक है। राम सामंती लोकमर्यादा के लिए जानबूझकर अपने जुड़ुएं बच्चे की मां बननेवाली सीता का परित्याग करता है, उन्हें वन-जंगल में भटकने के लिए छोड़ देता है । गंगा किनारे अकेली सीता को रोती- बिलखती देखकर एक अधेड़ महिला कुछ युवतियों के सहयोग से सीता को वाल्मीकि देव के आश्रम में पहुंचा देती है। आश्रम के बगल में एक कुटिया तैयार की जाती है जहाँ सीता के ठहरने की व्यवस्था होती है। सीता के परित्याग से दुखी होकर मंथरा आत्महत्या कर लेती है और तीनों माताओं- कौशल्या, कैकयी एवं सुमित्रा का राज्य से मोहभंग हो जाता है। तीनों माताएं सीता की परिचारिका को साथ लेकर शृंग ऋषि के आश्रम में वानप्रस्थ जीवन बिताने निकल पड़ती हैं। इधर वाल्मीकि देव के आश्रम में बनी कुटिया में ही सीता दो पुत्रों को जन्म देती हैं, जिनका नाम पड़ता है- लव और कुश । लव और कुश बड़े हो रहे थे और सीता ने शिक्षा का दीप आश्रम में जला रखा था। शिक्षा के प्रसार से शंबूक नामक नायक का प्रादुर्भाव होता है जो सीता को अपना गुरु मानता है। शंबूक की साधना से भयभीत तथाकथित रामराज्य के पंडितों द्वारा पाखंड खड़ा किया जाता है और जो राम अनार्य जातियों और गणों की मदद से रावण को जीतता है, वही शंबूक की तपस्या से रुष्ट होकर उसकी हत्या को उद्धत हो जाता है। शंबूक वध प्रकरण में शंबूक अपनी बात अपने लोगों तक पहुंचाने में सफल होता है। फिर अवध के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को लव-कुश के द्वारा रोके जाने के उपरान्त संधि करने को मजबूर राम का पश्चाताप और सीता का राम को संवरण करने के बजाय धरती में समा जाने की कहानी है।

'परित्यक्ता' काव्य में रामायण के विविध मिथकीय पात्रों को विविध रूपों में नये संदर्भ के अनुकूल गढ़े गए हैं, जिससे ये पात्र 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध से 21 वीं सदी के अब तक के समाजिक, आर्थिक और राजनैतिक चेतना से जुड़े दिखाई देते हैं। इसमें पात्र कोई व्यक्ति विशेष न होकर सामूहिकता में वर्गीय चेतनायुक्त नेतृत्व

करनेवाला लगता है। जैसे सीता स्त्री स्वाधीनता का प्रतीक बन जाती है, शंबूक दलितों और पिछड़ों की चेतना का, मंथरा आत्म बलिदान का, कौशल्या, कैकेयी एवं सुमित्रा राजसत्ता से विक्षुब्ध परिजनों का प्रतीक बन जाती है।

'परित्यक्ता' में स्त्री- विमर्श कई स्तरों पर दिखाई देता है। स्त्री उच्च वर्ग की हो या निम्न वर्ग की, उनके साथ अन्याय की अकथ कहानी चलती ही रहती है।स्त्री चेतना के प्रमाण स्वरूप हम मंथरा, कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा आदि जैसी स्त्री पात्रों द्वारा राम के गलत फैसले के विरोध के रूप में देख सकते हैं। इसी तरह सीता द्वारा आश्रम में शिक्षा-दीक्षा देने का फैसला किया जाना एक समाज-सुधारक प्रगतिशील निर्णय था। काव्य में दलित चेतना का भी स्वर कई रूपों में देखने को मिलता है। शंबूक सिर्फ दलित चेतना का ही स्वर नहीं है, बल्कि वह सभी दलितों-वंचितों की चेतना का सम्वेत स्वर है,जो स्त्री चेतन का नेतृत्त्वकारी स्वर के रूप में सीता को अपना नेता मानता है। शंबूक और सीता दोनों ही सामंती राज्य सत्ता के खिलाफ दलित, गरीब, शूद्र- अनार्य और स्त्री अस्मिता की मुक्तिकामी खोज है। यह कृति अपने वर्तमान से जद्दोजहद करते हुए नये सपनों का नया संसार वसाने के लिए प्रबंधकत्व को रूपाकार ग्रहण करती है।जिस तरह से बिहार में शोषित-पीड़ित-वंचित एवं दलित समाज के ऊपर कहर बरपाया गया था , वैसा देश भर में कहीं नहीं हुआ था। न ही बिहार की तरह उनके द्वारा कहीं वैसा संगठित प्रतिरोध ही किया जा रहा था। पूरे देश में बिहार की धरती पर ही सवर्ण सामंतों और दलितों-वंचितों के बीच सबसे तीखा खूनी संघर्ष देखने को मिलता है। इतिहासकार रामचंद्र गुहा की पुस्तक "भारत नेहरू के बाद" में भी इसी ढंग का उल्लेख मिलता है।खासकर स्त्री उत्पीड़न और संहार की भी स्पष्ट छाप 'परित्यक्ता' प्रबंध काव्य में अभिव्यक्त होती है ।

रामचंद्र गुहा ने अपनी पुस्तक में यह भी दर्ज किया है कि "बहुत मायनों में देश में चल रही आधुनिकता की प्रक्रिया ने समाज में लिंग-विभेद को बढ़ावा दिया था।" (भारत नेहरू के बाद - पेज 107 - रामचंद्र गुहा) 'परित्यक्ता' में समसामयिकता का विशद विवेचन अध्ययन का विषय है।

शोध विषय के प्रस्तुत प्रबंध-काव्य में समाधान और समझौते का स्वर मुखर है। गण और राजसत्ता में समझौते के साथ ही काव्य में सीता धरती की गोद में समा जाती है। समझौते का आधार तैयार होता है दलित और गरीब गणों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार से उत्पन्न जागृति और अन्याय के खिलाफ प्रतिरोध की चेतना से । संवैधानिक समाधान के रास्ते पर चलना काव्य की सफलता है।

इसी प्रकार राम कथा- काव्य परम्परा में 'परित्यक्ता' के स्थान का निर्धारण आवश्यक है ,यह इसीलिए भी आवश्यक है ताकि आमजन के संघर्षों को राम कथा से जोड़कर विकास के पौराणिक एवं ऐतिहासिक द्वंद्वात्मकता को समझा जा सके । राम कथा की समृद्ध परम्परा में विभिन्न पात्रों को भिन्न-भिन्न महाकवियों के द्वारा पुनर्स्थापित किया गया है। शंबूक एक ऐसा शूद्र (दलित) पात्र है जिसे राम कथा में राजसत्ता के द्वारा निर्दोष होने पर भी सजा दी जाती है। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड में लिखा गया है कि ब्राह्मण-पुत्र की मृत्यु का कारण नारद द्वारा शूद्र की तपस्या को बताया गया । राम दक्षिण जाकर शम्बूक का वध करता है। कन्नड़ राष्ट्रकवि कुवेम्पु ने 'शूद्रतपस्वी' में शंबूक कथा को सर्वथा एक नवीन रूप में प्रस्तुत किया है, राम 'शूद्र तपस्वी' पर ब्रह्मास्त्र चलाता है परन्तु उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। स्पष्टतः दलित चेतना के विकास में 'शंबूक' के चरित्र के प्रभाव का होना स्वभाविक है। हिन्दी साहित्य में दलितों -पिछड़ों की चेतना के विकास को समझने हेतु राम कथा- काव्य परम्परा की अगली प्रगतिशील कड़ी के रूप में 'परित्यक्ता' की वृहद आलोचनात्मक विवेचना शोध की आवश्यकता प्रतीत होती है।

## शोध की आवश्यकता :

प्रस्तावित शोध की आवश्यकता इसलिए है ताकि रामकथा- काव्य परम्परा के नए काव्यों के दृष्टिकोण को समझा जा सके, 21वीं सदी के दलित और स्त्री सम्बधित विमर्शों को आगे बढ़ाया जा सके तथा जनकवि सुरेन्द्र प्रसाद के साहित्य साधना और संघर्ष का विश्लेषण किया जा सके।इसके साथ ही शोषितों- उत्पीड़ितों की अस्मिता की खोज और उसकी मुक्तिकामी आकांक्षा पर विमर्श किया जा सके । जनवादी कवि सुरेन्द्र प्रसाद पर अब तक का शोध पर्याप्त नहीं है। 'परित्यक्ता' उनकी श्रेष्ठ रचना है ,जिसपर अभी तक कोई कार्य नह हुए ही नहीं हैं। 21वीं शदी के जनवादी लेखन की दशा और दिशा तथा हाशिए पर धकेल गए दलितों ,स्त्रियों,आदिवासियों, गरीबों एवं वंचितों की अस्मिता की खोज के लिए इस तरह के शोध की आवश्यकता है।

पूर्व में किये गये एतद् - संबंधी शोध कार्य : 'परित्यक्ता' प्रबंध काव्य पर अलग से कोई शोध कार्य अब तक उपलब्ध नहीं है। समकालीन चुनौती विशेषांक के त्रि-लोचन में उक्त प्रबंध काव्य के कई आलेख प्रकाशित हैं। पुस्तक परित्यक्ता की भूमिका " उत्पीड़ितों की अस्मिता की खोज" एक संक्षिप्त आलोचना है जिसे आलोचक प्रणय कृष्ण और मृत्युंज जी ने संयुक्त रूप से उत्कृष्ट समालोचकीय दृष्टि से प्रस्तुत किया है। समकालीन चुनौती के प्रमुख आलेखों -सुरेन्द्र प्रसाद के 'राम कौन और किसका', रामदेव महतो के' परित्यक्ता के मार्मिक स्थल', सुरेन्द्र प्रसाद सुमन के 'सो गया है धार में आकाश का मन ' आदि में 'परित्यक्ता' काव्य की संक्षिप्त एवं सारगर्मित आलोचना की गई है। 'सुरेन्द्र प्रसाद के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व' डॉ० स्नेहलता कुमारी का शोध कृत्य एक महत्वपूर्ण कार्य है।

## शोध कार्य के स्रोत (आधार ग्रंथ)

प्रस्तावित शोध कार्य में लोकायतन, इलाहाबाद प्रकाशन से प्रकाशित 'परित्यक्ता ' प्रबंध काव्य, लेखक सुरेन्द्र प्रसाद को आधार बनाया जायेगा। इसके अलावा राम कथा परम्परा को समझने के लिए फ़ादर कामिल बुल्के की पुस्तक 'रामकथा', प्रभावती अम्मा. एन. की शोध 'रामायण पर आधारित आधुनिक हिन्दी काव्यो का विश्लेषणात्मक अध्ययन' आधार होगा। साथ ही 1963 के बाद की इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकें " भारत नेहरू के बाद - रामचंद्र गुहा " तथा " सुरेन्द्र प्रसाद के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व " डॉ० स्नेहलता कुमारी का शोध आधार ग्रंथ होगा।समकालीन चुनौती के विभिन्न अंक भी उपयोगी होंगे।

## शोध की सीमा:

राम कथा परम्परा एक विस्तृत विषय है जिसपर पूर्व में भी कार्य हो चुका है, परन्तु इस परम्परा में जनवादी साहित्यकारों द्वारा रचित रामकथा-काव्य को अब तक वाज़िब स्थान नहीं दिया गया है। परित्यक्ता के माध्यम से उक्त परम्परा में जनवादी साहित्य के स्थान और 21वीं सदी के स्त्री-विमर्श और दलित विमर्श को समुचित स्थान दिए जाने की आवश्यकता है। विषय के अनुरूप खाका तैयार कर योजनाबद्ध प्रक्रिया से शोध के आधार- ग्रंथ पर केन्द्रित हो कर विवेचना और विश्लेषण के उपरान्त निष्कर्ष उपस्थापित किया जाएगा। अत: अनावश्यक विस्तार से बचने के लिए आवश्यकतानुसार ही संदर्भ और उद्धरण का सहयोग भी लिया जा सकता है।

## शोध की पूर्व कल्पना / संभावित निष्कर्ष:

शोध के क्रम में शोधार्थी द्वारा कार्यारंभ से पहले शोध विषय के विभिन्न अध्यायों से संबंधित कुछ सामान्य अनुमान लगाया जाएगा। ऐसे सामान्य अनुमान लगाने का उद्देश्य आगामी अध्ययन को एक निश्चित दिशा देना होगा। इसका लाभ यह होगा कि शोधार्थी यत्र-तत्र न भटककर एक निश्चित आधार पर तथ्यों का संकलन और संग्रहण करेगा। इस तरह यह विश्वास किया जा सकता है कि निष्कर्ष सोद्देश्य एवं सार्थक होगा ।

**<u>ज्ञान के क्षेत्र में योगदान :</u>**

21वीं सदी का प्रबंध काव्य 'परित्यक्ता' का प्रकाशन वर्ष 2007 है। नयी रचना होने के कारण इसपर ज्यादा कार्य नहीं हो पाया है।यह रामकाव्य परम्परा में जनवादी कवि सुरेन्द्र प्रसाद का एक अद्‌भुत प्रयोग है। इस प्रबंध काव्य में समाजिक-राजनीतिक चेतना, दलित चेतना, स्त्री चेतना और सरोकार अधिक व्यापक है। इस सरोकार को शोध के माध्यम से अधिक स्पष्ट किया जा सकेगा, जिससे इस कृति के प्रति न्याय हो सके और हिन्दी भाषी जन सामान्य उपकृत हो सके। इस शोधकार्य से ज्ञान के क्षेत्र में वृद्धि होगी ।

**<u>शोध की प्रविधि:</u>**

अध्ययन पद्धति विश्लेषणात्मक होगी ।
आगमन पद्धति द्वारा वृहत्तर तथ्यों का संकलन, संग्रहण और अनुशीलन तथा निगमन पद्धति से मंथन के पश्चात तार्किक विवेचना एवं विश्लेषण के उपरान्त शोध निष्कर्ष की स्थापना की जाएगी ।

**<u>स्रोत सामग्री की उपलब्धता</u>**

स्रोत सामग्री की उपलब्धता हेतु राष्ट्रीय एवं विश्वविद्यालय स्तर के पुस्तकालयों, संस्थानों से सम्पर्क किया जायेगा।

**<u>परिकल्पना (यदि कोई हो तो):</u>**

बीसवीं सदी के अन्तिम दशक और 21वीं सदी के प्रारम्भिक दशकों के स्त्री और दलित जीवन को व्यापक रूप से देखने और परित्यक्ता 'पर पड़नेवाले प्रभाव की परिकल्पना है।

**<u>प्रस्तावित अध्याय:</u>**

वैसे शोधकार्य के प्रारंभ में निष्कर्षो की रूपरेखा सामान्य होती है। तथ्यगत ठोस निष्कर्षों की स्थापना शोध प्रबंध की प्रस्तुति के साथ ही होती है। इस मध्य निष्कर्ष अथवा मूल्यांकन निर्माणाधीन होता है। अत: ठोस निष्कर्षों की प्रबल संभावना के साथ प्रस्तुत शोध कार्य को निम्नलिखित शोध शीर्षक औरशअध्यायों में बाँटकर पूरा किये जाने की  कार्य योजना प्रस्तावित है—

**शोध शीर्षक - राम कथा- काव्य परम्परा में 'परित्यक्ता'**

*****

प्रथम अध्याय-रामकथा के विविध स्रोत एवं रामकथा-काव्य परम्परा का विकास ।
द्वितीय अध्याय-कवि सुरेन्द्र प्रसाद: व्यक्तित्व एवं कृतित्व  ।
तृतीय अध्याय  -'परित्यक्ता' काव्य की विषय- वस्तु ।
चतुर्थ अध्याय- 'परित्यक्ता' प्रबन्ध काव्य के विविध पात्रों का चरित्र-चित्रण।
पंचम अध्याय--समकालीन परिदृश्य और परित्यक्ता की  प्रबंधकत्व-कला ।
षष्ठम अध्याय : 'परित्यक्ता' काव्य में "स्त्री -विमर्श" तथा दलित-विमर्श
सप्तम अध्याय : 'परित्यक्ता' काव्य का उद्देश्य और रामकथा-काव्य परम्परा में इसका महत्त्व ।
उपसंहार

**संभावित संदर्भ ग्रंथों की सूची-**

(1) परित्यक्ता-सुरेन्द्र प्रसाद

(2) समकालीन चुनौती - विशेषांक के त्रिलोचन

(3) जनवाद और समकालीन हिन्दी कविता- सुरेन्द्र प्रसाद सुमन

(4) रामकथा - फादर कामिल बुल्के

(5) रामायण पर आधारित आधुनिक हिन्दी काव्यो का विश्लेषणात्मक अध्ययन-प्रभावतीअन्ना एन

(6) हिन्दी साहित्य - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(7) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० नगेन्द्र

(8) इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय-EHD

(9) इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय - MHD

(10) दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र -ओम प्रकाश वाल्मीक

(11) धरती धन न अपना- जगदीशचन्द्र

(12) दलित संघर्ष और सामाजिक न्याय- डॉ पूरणमल

(13) इक्कीसवीं सदी की ओर- सुमन कृष्ण कान्त

(14) स्त्री संघर्ष का इतिहास -राधाकुमार

(15) नारी प्रश्न -सरला महेश्वरी

(16) स्त्री-विमर्श का यथार्थ - ममता कालिया

प्रस्तावित शोध प्रारूप शोध कार्य का प्रथम चरण है।शोध के क्रम में अनुभव जन्य स्थिति में कार्ययोजना में यथोचित फेरबदल या जोड़ – घटाव किया जा सकेगा।

पर्यवेक्षक 13-04-2024

डॉ० सुरेन्द्र प्रसाद सुमन एसोसिएट प्रोफेसर,
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय ,दरभंगा ।

गवेषक

कल्पना कुमारी

कल्पना कुमारी
रौल न०-22,सत्र-2022--23,
ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय,दरभंगा
पता-के०एम०टैक,लहेरियासराय,
दरभंगा 846001।